



डिजिटल मीडिया में हिंदी के उपयोग पर भावनात्मक महत्व

राकेश मणि त्रिपाठी^{1*}, डॉ. आशीष कुमार तिवारी²

1. शोधार्थी, श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर, म.प्र., भारत
diganthot9@gmail.com,

2. एसोसिएट प्रोफेसर, श्रीकृष्णा यूनिवर्सिटी, छतरपुर, म.प्र., भारत

सारांश: इस अध्ययन का लक्ष्य यह पता लगाना है कि विभिन्न समकालीन इंटरनेट परिदृश्यों में हिंदी और अंग्रेजी का परस्पर उपयोग कितनी बार किया जाता है। गूगल असिस्टेंट और अन्य स्मार्ट डिवाइस मानव ऑपरेटरों के विपरीत हिंदी में संवादों को समझ सकते हैं और उनका जवाब दे सकते हैं। रिपोर्टिंग में सोशल मीडिया के उपयोग के लाभों को भारतीय मीडिया ने पहचाना है। इस अध्ययन का उद्देश्य शीर्ष हिंदी समाचार संगठनों द्वारा अपनी रिपोर्टिंग में सोशल मीडिया को शामिल करने के लिए उपयोग की जाने वाली रणनीतियों और इस एकीकरण से उत्पन्न चुनौतियों से निपटने के लिए उनके समाचार संपादकों द्वारा की गई कार्रवाइयों के बारे में अधिक जानना है। इस अध्ययन का उद्देश्य हिंदी-भाषी मीडिया की रिपोर्टिंग प्रथाओं पर गौर करना है। व्यवसाय के लिए सोशल मीडिया के उपयोग के लाभ और हानि के बारे में अधिक जानने के लिए, हमने महत्वपूर्ण हिंदी मीडिया प्रकाशनों के पाँच समाचार संपादकों से राय ली। हिंदी ऑडियो, ई-बुक्स और कुकू एफएम जैसी सोशल मीडिया साइटों के माध्यम से हिंदी साहित्य को बढ़ावा दिया जाता है। हिंदी स्कॉलर जैसी वेबसाइटें पत्रिका प्रकाशन और सामग्री निर्माण के माध्यम से इसे पूरा करती हैं। उपयोगकर्ता डिजिटल मीडिया के बारे में अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं और उपर्युक्त चैनलों का उपयोग करके इसमें योगदान दे सकते हैं। हिंदी साहित्य राष्ट्रीय औसत से कहीं ज़्यादा तेज़ी से बढ़ रहा है, हालाँकि इसमें कुछ कमियाँ भी हैं, जैसे कि दो या तीन फ्रॉन्ट जैसे कुर्ती देव, मंगल और निर्मल का कम इस्तेमाल। अंग्रेज़ी टाइपफ़ेस की तुलना में उपयोगकर्ताओं के पास कम विकल्प हैं। अखबारों के संपादकीय विभाग, हिंदी और सोशल मीडिया सभी चर्चा के विषय हैं।

मुख्य शब्द: हिंदी, साहित्य, भाषा, डिजिटल मीडिया, फिल्म, कंटेंट, समाचार, सोशल मीडिया

----- X -----

परिचय

भारतीय मीडिया की कार्यप्रणाली और भारतीय भाषाओं के विकास पर इसका प्रभाव निश्चित रूप से एक दूसरे से जुड़ा हुआ है। भारतीय भाषा के जानकारों और शोधकर्ताओं का मानना है कि वैश्वीकरण और पश्चिमी अंग्रेजी भाषा के मीडिया की भागीदारी भारतीय बोलियों की दीर्घजीविता के लिए खतरा है। ऐसे मीडिया के आने से जो सीमाओं को नहीं समझता, वे इसमें कमी देखते हैं। पिछले कुछ वर्षों में मीडिया की मजबूती में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

भारत के डिजिटल परिवेश में तेज़ी से हो रहे बदलावों के कारण क्षेत्रीय भाषा की सामग्री तेज़ी से लोकप्रिय हो रही है। हिंदी भारत की सबसे ज़्यादा बोली जाने वाली क्षेत्रीय भाषा है, जिससे ऑनलाइन हिंदी सामग्री मिलना आम बात हो गई है। यह पोस्ट बताएगी कि भारत के डिजिटल इकोसिस्टम में हिंदी सामग्री क्यों ज़्यादा महत्वपूर्ण होती जा रही है और व्यवसाय इसका इस्तेमाल कैसे कर सकते हैं। बेशक, अंग्रेज़ी दुनिया भर में और भारत में सबसे ज़्यादा इस्तेमाल की जाने वाली ऑनलाइन भाषा है। हालाँकि, Google डेटा से पता चलता है कि **94% विकास दर** हिंदी सामग्री के उपभोग में वृद्धि हुई है। वैश्विक व्यवसाय इस बात को ध्यान में रखते हुए अपनी रणनीतियों के हिस्से के रूप में क्षेत्रीय भाषाओं पर जोर दे रहे हैं।

एक साल पहले, फेसबुक उपयोगकर्ता लॉगिन स्क्रीन पर हिंदी में लिखा देखकर चौंक गए थे। इसके बाद, अमेरिका स्थित विज़ुअल डिस्कवरी प्लेटफ़ॉर्म Pinterest ने इसका हिंदी संस्करण जारी किया, जिससे यह भारत में उपयोगकर्ताओं के लिए सुलभ हो गया। ऑनलाइन इतने सारे देशी वक्ताओं के साथ, सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म पर बेहतर भाषा रिसर्च होना महत्वपूर्ण है। Google अब स्थानीय भाषाओं, मुख्य रूप से हिंदी में Google मैप्स जैसे प्रमुख उत्पादों के उपयोग को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है, ताकि टियर II और III शहरों में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं को पूरा किया जा सके।

भारत कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए दुनिया के सबसे बड़े और सबसे बड़े व्यापारिक केंद्रों में से एक बन रहा है। इन कंपनियों के विस्तार और संचालन के लिए उस क्षेत्र विशेष की भाषा का ज्ञान बहुत ज़रूरी है क्योंकि भाषा संचार का एक माध्यम है और समाज का हर व्यक्ति एक दूसरे से या समूह में संवाद करने के लिए इसका इस्तेमाल करता है। भाषा किसी राष्ट्र की पहचान होती

है। जिस देश का भाषा के मामले में विकास होगा, वह विकास के शिखर पर पहुँच सकता है। भारतीय बाज़ार की बढ़ती प्रमुखता की पृष्ठभूमि में हिंदी को सभी क्षेत्रों में काफ़ी फ़ायदा हुआ है। आज सूचना क्रांति का समय है। पहले मनुष्य संदेश और समाचार भेजने के लिए अलग-अलग तरीकों का इस्तेमाल करता था। जिस तरह से मानव बुद्धि ने प्रकृति के रहस्यों को उजागर किया है, उसी तरह सूचना जगत और मीडिया में भी विस्फोट हुआ है। वैश्वीकरण के इस दौर में दुनिया एक छतरी के नीचे आ रही है। ऐसा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और सोशल मीडिया के विकास से हुआ है। दुनिया को इंटरनेट का सपना दिखाने वाले मार्शल मैक्लुहान ने 20वीं सदी के मध्य में घोषणा की थी कि मीडिया पूरी दुनिया और चेतना को बदल देगा। 'अंडरस्टैंडिंग मीडिया: द एक्सटेंशन ऑफ़ मैन' में उन्होंने वैश्विक गांव की अवधारणा और उसके समर्थक मीडिया के साम्राज्यवाद की अवधारणा पेश की।

सूचना क्रांति के फलस्वरूप उभरा मीडिया वर्तमान युग में डिजिटल क्रांति का सबसे बड़ा हथियार बन गया है। भाषा के बिना मीडिया या वेब मीडिया बेजान है। आज के युग में विचारों के संप्रेषण के लिए इंटरनेट सबसे स्वतंत्र और तेज माध्यम है, जो वाणिज्य, व्यापार, कृषि, शिक्षा, प्रेस मीडिया आदि सभी क्षेत्रों में फल-फूल रहा है। इसके माध्यम से साहित्य हो या सिनेमा या कोई अन्य सभी विषयों की जानकारी एक बटन दबाते ही मिल जाती है। वैश्वीकरण के युग के साथ ही वेब मीडिया और हिंदी का अंतर्संबंध विकसित हुआ। सोशल मीडिया संचार को बढ़ावा देता है और भाषाओं के उपयोग और विकास को प्रभावित करता है, जिससे यह विशेष भाषाओं के विकास को आकार देने में एक महत्वपूर्ण कारक बन जाता है। भाषा संचार के लिए एक बुनियादी उपकरण के रूप में कार्य करती है, जो व्यक्तिगत बातचीत से लेकर शिक्षा तक जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करती है। लोगों के जीवन में, विशेष रूप से युवाओं और छात्रों के बीच सोशल मीडिया की लगातार बढ़ती मौजूदगी ने भाषा सीखने के साधन के रूप में इसकी क्षमता पर सवाल खड़े कर दिए हैं। यह लेख प्रासंगिक उदाहरणों की मदद से यह बताता है कि कैसे सोशल मीडिया ने हिंदी की वैश्विक उपस्थिति को फैलाने और मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

वैश्विक स्तर पर, सोशल मीडिया मार्केटिंग में संवाद स्थापित करने के लिए अंग्रेजी भाषा का उपयोग किया जाता है। जब विशिष्ट देशों की बात आती है, तो कुछ देश सोशल मीडिया मार्केटिंग उद्योग में उत्पाद के बारे में विज्ञापन फैलाने के लिए अपनी मूल भाषा का उपयोग करते हैं। भारत में कई भाषाएँ और बोलियाँ हैं। भारतीय भाषा की सामग्री अपने ग्राहकों तक बहुत हद तक पहुँचती है। शुरुआत में, भारत में, ऑनलाइन मार्केटिंग में अंग्रेजी भाषा का बोलबाला था। अंग्रेजी ज्यादातर बेंगलूर, चेन्नई, मुंबई, कोलकाता और दिल्ली जैसे मेट्रो शहरों में बोली जाती है। यह कॉर्पोरेट जगत में इस्तेमाल की जाने वाली मान्यता प्राप्त आधिकारिक भाषा होने के साथ-साथ औपचारिक भाषा भी है। हिंदी भारत की आधिकारिक भाषा है; यह भारत की अधिकांश आबादी द्वारा बोली जाती है जबकि बाकी आबादी अपने राज्य की अपनी क्षेत्रीय भाषा में सहज है। क्षेत्रीय भाषा आम तौर पर एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के बीच संचार के लिए अच्छी होती है। डिजिटल मार्केटिंग उद्योग में संवाद करने के लिए भाषा का उपयोग एक माध्यम के रूप में किया जाता है। भाषा में उपभोक्ताओं से बात करने और उनसे संवाद करने की शक्ति होती है और बिक्री में भी वृद्धि होती है, साथ ही अगर इसे ठीक से संप्रेषित नहीं किया जाता है तो यह उपभोक्ताओं को उत्पाद से दूर कर देगा।

विपणन और विज्ञापन उपभोक्ता को उत्पाद खरीदने के लिए प्रभावित करते हैं। उत्पाद के बारे में जानकारी संप्रेषित करने का माध्यम उपभोक्ता के लिए उत्पाद पर भरोसा करने और उसे खरीदने तथा उत्पाद के बारे में अच्छी बातें लोगों तक पहुँचाने के लिए बहुत ज़रूरी है। हालाँकि विज्ञापन में, चित्र और छवि उत्पाद के बारे में बता सकते हैं, लेकिन जब ब्रांड और उत्पाद के बारे में टैग लाइन जैसी कुछ महत्वपूर्ण जानकारी संप्रेषित करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली भाषा बहुत महत्वपूर्ण होती है। जब ब्रांड अपनी क्षेत्रीय भाषा में अभियान चलाने की कोशिश करता है, तो इसका अपना प्रभाव और उत्पाद की पहुँच होगी। जब ब्रांड अंतरराष्ट्रीय सहयोगी बनाना चाहता है, तो भाषा महत्वपूर्ण होती है। अपने संभावित ग्राहकों से संवाद करने में भाषा एक बाधा होनी चाहिए।

साहित्य की समीक्षा

कुमार, ललित. (2023) यह अध्ययन समकालीन इंटरनेट परिदृश्यों में हिंदी और अंग्रेजी की परस्पर विनिमयशीलता की जांच करता है, जो शीर्ष हिंदी समाचार संगठनों द्वारा रिपोर्टिंग में सोशल मीडिया के उपयोग पर केंद्रित है। अध्ययन का उद्देश्य समाचार संपादकों द्वारा सोशल मीडिया को उनकी रिपोर्टिंग में शामिल करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली रणनीतियों और इन संगठनों

के सामने आने वाली चुनौतियों को समझना है। व्यवसाय के लिए सोशल मीडिया के उपयोग के लाभ और नुकसान को समझने के लिए महत्वपूर्ण हिंदी मीडिया प्रकाशनों के पांच समाचार संपादकों का सर्वेक्षण किया गया। हिंदी ऑडियो, ई-बुक्स और कुकू एफएम जैसी सोशल मीडिया साइट्स हिंदी साहित्य को बढ़ावा देती हैं, जबकि हिंदी स्कॉलर जैसी वेबसाइट सामग्री प्रकाशित और बनाती हैं। उपयोगकर्ता इन चैनलों के माध्यम से डिजिटल मीडिया के बारे में अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं। हिंदी साहित्य राष्ट्रीय औसत से अधिक तेजी से बढ़ रहा है, लेकिन इसमें कुछ कमियां भी हैं, जैसे कि कुछ फॉन्ट का कम उपयोग और अंग्रेजी टाइपफेस की तुलना में कम विकल्प।

के., जयलक्ष्मी. (2023). यह लेख वेब मीडिया में हिंदी के वैश्विक परिदृश्य की जांच करता है, तथा प्रौद्योगिकी, वाणिज्य और वेब मीडिया में इसके प्रभाव पर ध्यान केंद्रित करता है। भारत की राष्ट्रीय भाषा और एशिया की लोकभाषा हिंदी एक वैश्विक भाषा बन गई है, तथा फेसबुक और ट्विटर जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर इसका उपयोग तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। यूनिकोड की शुरुआत ने हिंदी को उसके सही देवनागरी रूप में पढ़ना और लिखना आसान बना दिया है, जिससे इन क्षेत्रों में इसका प्रचार-प्रसार बढ़ा है। जैसे-जैसे भारत का विकास जारी है, ई-कॉमर्स, वेब और डिजिटल मीडिया में हिंदी का महत्व वैश्विक स्तर पर बढ़ रहा है। हिंदी और अन्य डिजिटल माध्यमों के विकास में अनुवाद की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। नई प्रौद्योगिकियों, उपकरणों और सॉफ्टवेयर के आगमन ने हिंदी भाषा के उपयोग की मांग को बढ़ाया है। इस शोधपत्र का उद्देश्य यह पता लगाना है कि हिंदी ने इन माध्यमों के माध्यम से वैश्विक परिदृश्य में किस तरह अपनी पहचान बनाई है।

ओडाबासी, (2019). अध्ययन पिछले एक दशक में प्रवासी आबादी की मीडिया उपभोग की आदतों का पता लगाता है, जो लोकप्रिय हिंदी फिल्मों के लिए डिजिटल स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्मों के विकास पर ध्यान केंद्रित करता है। अध्ययन दो मॉडलों के बीच अंतर करता है: प्रमुख यूएस-आधारित स्ट्रीमिंग सेवाएं जो लगातार हिंदी, तमिल और तेलुगु जैसी भाषाओं में सामग्री विकसित करती हैं, और मुख्य रूप से भारत में संचालित टेलीविजन नेटवर्क जो भारत के बाहर के ग्राहकों के लिए अपनी कैटलॉग उपलब्ध कराने के लिए ऑनलाइन स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म लॉन्च करते हैं। अध्ययन क्यूरेटोरियल रणनीतियों की पहचान करता है, जैसे कि अनन्य मूल सामग्री, बहु-एपिसोडिक कार्य और क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं में फिल्में, और दो केस स्टडीज़ का विश्लेषण करता है, जिन्होंने स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म के माध्यम से महत्वपूर्ण प्रवासी दर्शकों को आकर्षित किया है: शकुन बत्रा की

अर्जुन, स्वाति. (2018). शोध लेख, 'हिंदी डिजिटल मीडिया प्लेटफॉर्म: पत्रकारिता का टैब्लॉयडवाद द्वारा प्रतिस्थापित किया जाना एक विचित्र मामला', हिंदी डिजिटल मीडिया क्षेत्र में अग्रणी राष्ट्रीय हिंदी समाचार वेबसाइटों की भूमिका की जांच करता है। अध्ययन का उद्देश्य आलोचनात्मक और अनुभवजन्य रूप से जांच करना है कि क्या ये वेबसाइटें पत्रकारिता के टैब्लॉयड रूप का अभ्यास और प्रचार करने के लिए नया मंच हैं। शोध पत्र हिंदी पत्रकारिता और न्यूज़रूम के डिजिटलीकरण के बीच के अंतरसंबंध का विश्लेषण करता है, यह तर्क देते हुए कि हिट और पेज-व्यू को इन वेबसाइटों पर सामग्री और अच्छी सामग्री के निर्माण से अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है।

गुयेन, ली एट अल. (2021). वियतनामी-अंग्रेजी भाषण डेटा को अर्ध-स्वचालित रूप से एनोटेट करने के लिए विकसित कैन वीईसी टूलकिट को स्वचालन प्रक्रिया को मानकीकृत करने के लिए हिंदी-अंग्रेजी में विस्तारित किया गया है। टूलकिट को इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (ICON) 2016 के साझा कार्य के डेटा पर लागू किया गया था, जिसमें भाषा और POS टैग के साथ एनोटेट किए गए सोशल मीडिया पोस्ट शामिल हैं। टूल ने ICON-2016 डेटा पर 87.99% का F1 स्कोर हासिल किया। प्रत्येक सोशल मीडिया सबसेट के पहले 500 टोकन का मैनुअल रूप से मूल्यांकन करने के बाद, लगभग 40% त्रुटियाँ गोल्ड-स्टैंडर्ड की समस्याओं के कारण हुईं, जो दर्शाता है कि सिस्टम की समग्र सटीकता रिपोर्ट की गई सटीकता से अधिक थी। यह विभिन्न भाषा संयोजनों और शैलियों पर कोड-स्विच किए गए कॉर्पोरा के एनोटेशन को स्वचालित करने की बड़ी क्षमता को दर्शाता है। लेखक अपने दृष्टिकोण की कुछ सीमाओं पर चर्चा करते हैं और इस पेपर के साथ अपने कोड और मानव मूल्यांकन को जारी करते हैं।

हिंदी के प्रयोग से जुड़ा भावनात्मक महत्व और पहचान की भावना

हिंदी भाषा प्राचीन है और इसका विकास संस्कृत से सीधा है। यह दुनिया की सबसे पुरानी धार्मिक और अमूर्त परंपराओं में से एक

है - ऐसी परंपराएँ जिन्होंने विभिन्न धर्मों और शो-स्टॉपर्स को प्रभावित किया है, चाहे हम इसे समझें या नहीं। दुनिया के समाजों की उल्लेखनीय प्रगति में हिंदी का बहुत बड़ा योगदान है और यह सम्मान के योग्य है, फिर भी इसका अध्ययन किया जाना चाहिए। विश्व इतिहास या भाषाओं में रुचि रखने वाला कोई भी व्यक्ति हिंदी के बारे में बहुत गंभीरता से पढ़ेगा। भारत भी दुनिया की एक उभरती हुई शक्ति है। यह एक बड़े पैमाने पर गरीबी से जूझ रहा है, लेकिन हर संकेत यह है कि भारत एक आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा है। किसी और मामले में, इसकी विशाल आबादी एक ऐसे बाजार का संकेत देती है जिसे कोई भी वैश्विक व्यवसाय अनदेखा नहीं करना चाहेगा। भारत ने एक क्षेत्रीय महाशक्ति के रूप में अपने लिए एक अच्छी नींव स्थापित करने की अपनी इच्छा को भी दर्शाया है। इसका मतलब यह है कि आप उम्मीद कर सकते हैं कि भारत राजनीतिक और रचनात्मक दोनों क्षेत्रों में दुनिया को मुख्य रूप से प्रभावित करेगा - जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, हिंदी और भी महत्वपूर्ण होती जाएगी। हिंदी दुनिया की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। दुनिया में 4% से ज़्यादा लोग हिंदी बोलते हैं, जो मंदारिन चीनी, अंग्रेज़ी और स्पेनिश से बस थोड़ा पीछे है। हिंदी भाषा का प्रभाव और महत्व इतना ज़्यादा है कि कई लोग इसे दूसरे तरीकों से भी समझने लगे हैं।

उत्तर भारत में 410 मिलियन से ज़्यादा लोग इसे बोलते हैं। हालाँकि, समय के साथ कई दक्षिण भारतीयों ने भी अपनी स्थानीय भाषा को बदलकर हिंदी को संवाद के साधन के रूप में अपनाया है। दुनिया पर हिंदी का प्रभाव प्राचीन काल से ही है, जब हिंदू धर्म पूरी दुनिया में फैला हुआ था। गौतम बुद्ध, महावीर और भगवान कृष्ण इसके पहले व्यक्ति थे। उन्होंने संस्कृत भाषा का इस्तेमाल संदेश देने के लिए किया, साथ ही आम लोगों के साथ भी, जिससे यह उन दिनों सबसे प्रभावशाली भाषा बन गई। हालाँकि, इसकी शुरुआत वेदों पर आधारित होने के कारण, यानी बाद में ब्रिटिश शासन से आज़ादी के बाद, संस्कृत को भारत की आधिकारिक भाषा बना दिया गया। हालाँकि, बदलते समय और पूरे भारत में लोगों के बीच संवाद के एक सामान्य तरीके की मांग के साथ, हिंदी सभी के लिए आदर्श विकल्प बन गई। दुनिया भर की कई भाषाओं पर इसके व्यापक प्रभाव के कारण कई इतिहासों ने इसे ज्ञान के मामले में सातवाँ स्थान दिया है। इसे दुनिया भर के स्कूलों में भारतीय इतिहास के एक हिस्से के रूप में भी शामिल किया जा रहा है, जो इंटरनेशनल जनरल सर्टिफिकेट ऑफ़ सेकेंडरी एजुकेशन (IGCSE) लोड अप के साथ जुड़ा हुआ है। इससे पता चलता है कि आज हिंदी भाषा ब्रिटेन सहित दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में कितनी महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय है। दुनिया भर में हिंदी की व्यापक लोकप्रियता के साथ, इसने कई अलग-अलग बोलियों और स्थानीय भाषाओं को प्रभावित किया है। हिंदी से प्रभावित कुछ प्रसिद्ध बोलियों में बंगाली, गुजराती, मराठी और पंजाबी शामिल हैं। इसका इतना प्रभाव होने का मुख्य कारण इसका विशाल इतिहास है, जो प्राचीन हिंदू काल से जुड़ा है जब भाषा पहली बार बोली जाती थी। संस्कृत एक महत्वपूर्ण स्रोत है जिसने हिंदी को दुनिया भर में अपना प्रभाव फैलाने में मदद की।

भाषा संचार और सूचना संप्रेषित करने के लिए एक बहुत ही प्रभावी उपकरण है। यह किसी की भावनाओं को व्यक्त करने की तकनीक के रूप में कार्य करती है। 1950 में अपनी शुरुआत और बीसवीं सदी में पुनर्जन्म के बाद से, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने वास्तविक दुनिया की व्यक्तिगत और सामाजिक चुनौतियों के लिए स्वीकार्य उत्तर प्रदान करके, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी) सहित विभिन्न क्षेत्रों में आवश्यक योगदान दिया है। एनएलपी मशीनों को समझने और कभी-कभी ऑडियो और टेक्स्ट के रूप में भाषाई जानकारी उत्पन्न करने में मदद करने के लिए कम्प्यूटेशनल और भाषाई तकनीकों का उपयोग करता है। सक्रिय जांच के तहत एनएलपी के क्षेत्र में भावना विश्लेषण (एसए), अनुवाद प्रणाली, प्रश्न और उत्तर प्रणाली, सूचना पुनर्प्राप्ति (आईआर), पाठ निर्माण प्रणाली और अन्य उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हैं। भावना का पता लगाना (ईडी) भावना विश्लेषण का एक क्षेत्र है जिसका उद्देश्य मोटे-मोटे और सामान्य ध्रुवीय असाइनमेंट के बजाय मानव भाषाओं से हर्षित, उदास, उग्र आदि जैसी बारीक-बारीक भावनाओं को निकालना है। भावना का पता लगाना किसी भी पाठ या आवाज के पीछे की भावना को निर्धारित करने की प्रक्रिया है और यह भावना विश्लेषण (एसए) का अधिक उन्नत रूप है।

• भारतीय संस्कृति और समाज के बीच अंतर्संबंध

संस्कृति एक विशिष्ट समूह या समाज के सदस्यों द्वारा साझा की जाने वाली मान्यताएँ, व्यवहार, वस्तुएँ और अन्य गुण हैं। लोग और समूह खुद को परिभाषित करते हैं, समाज के साझा मूल्यों के अनुरूप होते हैं और संस्कृति के माध्यम से समाज में योगदान करते हैं। भाषा, परंपराएँ, मूल्य, मानदंड, रीति-रिवाज, नियम, तकनीक, प्रौद्योगिकी, उत्पाद, संगठन और संस्थाएँ सभी सांस्कृतिक पहलुओं में शामिल हैं। प्रत्येक समाज अपनी संस्कृति को एक परंपरा के रूप में पहचानता है और परिणामस्वरूप, प्रत्येक समाज

अपनी संस्कृति से बनता है। मानवीय मूल्यों और मान्यताओं के समूह को संस्कृति कहा जाता है, इसे मानव समाज में धर्म और परंपरा के रूप में देखा जाता है। एक व्यक्ति अपनी संस्कृति और समाज से जुड़ाव महसूस करता है क्योंकि संस्कृति और समाज एक दूसरे के पूरक हैं। किसी भी स्थान की संस्कृति उसके सामाजिक परिवेश में परिलक्षित होती है। सरल शब्दों में, समाज शरीर है और संस्कृति उसकी आत्मा है, क्योंकि संस्कृति सामाजिक संबंधों को बनाए रखने में मदद करती है, संस्कृति के अभाव में सामाजिक जीवन संभव नहीं है क्योंकि संस्कृति समाज में मूल्यों और आदर्शों को स्थापित करती है। वर्तमान में, समाज और संस्कृति दोनों को संरक्षण की आवश्यकता है क्योंकि युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति से विमुख होने लगी है और पश्चिमी सभ्यता की ओर आकर्षित हो रही है, इसलिए हमें अपनी संस्कृति को समाज में विलुप्त होने से बचाना होगा।

डिजिटल मीडिया में हिंदी के उपयोग को प्रभावित करने वाले सामाजिक-भाषाई कारक

वर्तमान समय में बहुभाषावाद किसी व्यक्ति के सबसे प्रमुख पहलुओं में से एक है क्योंकि वे कई अलग-अलग शिक्षण माध्यमों के संपर्क में आते हैं। बहुभाषावाद की अवधारणा किसी व्यक्ति की एक से अधिक भाषाओं में खुद को व्यक्त करने की क्षमता को संदर्भित करती है। कोड-स्विचिंग शब्द बहुभाषावाद की अवधारणा के काफी करीब है क्योंकि इसे व्यक्ति की मातृभाषा के अलावा किसी अन्य भाषा में बातचीत करने के कार्य के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। कोड-स्विचिंग से जुड़े साहित्य ने क्षेत्र के शोधकर्ताओं का बहुत ध्यान आकर्षित किया है क्योंकि उन्होंने इस संबंध में कई दिलचस्प जानकारीयें सामने रखी हैं। व्यक्तियों के कोड-स्विचिंग पैटर्न को समझने की आवश्यकता को बढ़ाने वाले महत्वपूर्ण कारकों में से एक नेटवर्किंग के लिए विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के उपयोग में उनकी भागीदारी है। वर्तमान समय में, विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म न केवल लोगों के मनोरंजन के उद्देश्य को पूरा करते हैं, बल्कि संचार के कई पेशेवर माध्यमों को भी स्थापित करने में मदद करते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर बड़ी संख्या में उपयोगकर्ता होने के कारण कोड स्विचिंग व्यवहार को समझने के पैटर्न में और भी बदलाव आया है। नूर अल-कैसी और मुस्तफ़ा अल-इमरान के 2017 के अध्ययन के अनुसार, छात्र सोशल मीडिया में कोड-स्विचिंग के प्रति बहुत सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदर्शित करते हैं। उपयोगकर्ताओं में, बैचलर डिग्री वाले लोग सोशल नेटवर्क वार्तालापों के दौरान कोड-स्विचिंग में संलग्न होने वाले बहुसंख्यक हैं, जबकि 81% शिक्षक भी सोशल नेटवर्क पर कोड-स्विचिंग का उपयोग करते हैं।

रिपोर्ट के अनुसार, वर्तमान समय में ऑनलाइन बातचीत की मात्रा में भारी वृद्धि देखी गई है। इसलिए, व्यक्तिगत और व्यावसायिक पहलुओं के लिए सबसे अधिक बार इस्तेमाल किए जाने वाले सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म (व्हाट्सएप) में से एक पर भारतीयों के बीच कोड-स्विचिंग व्यवहार को समझने के लिए अध्ययन किया जाना चाहिए, विशेष रूप से अंग्रेजी और हिंदी भाषाओं के मामले में। इस अध्ययन के पीछे मुख्य उद्देश्य दो पहलुओं को एकीकृत करना है, यानी संचार के संबंध में वर्तमान समय में सोशल मीडिया का बार-बार उपयोग और व्हाट्सएप के माध्यम से संचार स्थापित करने में अंग्रेजी और हिंदी भाषाओं के बीच कोड-स्विचिंग का उपयोग। वर्तमान में, 2014 में 465 मिलियन की तुलना में 2022 में व्हाट्सएप के 2.6 बिलियन अद्वितीय उपयोगकर्ता हैं। यह संचार के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म की लोकप्रियता को दर्शाता है, और इस संबंध में भारतीय उपयोगकर्ताओं के बीच कोड-स्विचिंग व्यवहार को समझना काफी दिलचस्प होगा।

भाषा सभ्य समाज की अंतिम उपलब्धि है। यह विचारों, भावनाओं और कार्यों को संप्रेषित करने, महसूस करने, विस्तृत करने और व्यक्त करने का एक साधन है। समाज में हमारा व्यवहार और भाषा का उपयोग अक्सर विभिन्न सामाजिक दबावों और पूर्वाग्रहों द्वारा नियंत्रित होता है। भाषा हमें घेरती है, हमारे व्यक्तित्व को परिभाषित करती है, हमारे सामाजिक व्यवहार को निर्धारित करती है, हमारी सामाजिक व्यवस्था का समर्थन करती है, हमारे विचारों और भावनाओं को इंगित करती है और हमें अपने विचारों को साझा करने, सहयोग करने और हमारी विकास प्रक्रिया को परिष्कृत करने के लिए एक मंच प्रदान करती है। इस प्रकार भाषा अच्छी तरह से परिभाषित सामाजिक समूहों में काम करने वाली सक्रिय मानवीय चेतना का एक उत्पाद है। समाज और भाषा एक दूसरे से आसानी से पहचाने जाते हैं और एक दूसरे पर काफी निर्भर हैं। प्रत्येक समाज अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार अपनी भाषा बनाता है और भाषा बदले में समाज को प्रभावित करती है और भविष्य के समाज में बदलाव का मार्ग प्रशस्त करती है। भाषा में परिवर्तन अक्सर सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण के परिवर्तन और विकास द्वारा चिह्नित होता है। बदलते परिवेश के निरंतर प्रवाह में, भाषा में परिवर्तन धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से दिखाई देते हैं।

भाषा का निर्माण सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों के आत्मसातीकरण से होता है। परिणामस्वरूप, भाषा में विविधता और व्यापक गुणवत्ता मौजूद होती है, जिससे भाषा के उपयोग में बहुत अधिक भिन्नताएँ पैदा होती हैं। भाषा की विविधता मुख्य रूप से प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अभिव्यक्ति की शैली के कारण होती है, जो बोलचाल के उपयोग और बोलियों की विविधताओं के साथ मिल जाती है। भाषाई विविधता से लेकर बहुभाषावाद तक, हर समाज में भाषाई विविधता मौजूद है। भाषाई विविधता वह भाषा है जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए अद्वितीय होती है और इसलिए इसमें कई विशेष व्यक्तिपरक लक्षण शामिल होते हैं जो एक भाषाई विविधता को दूसरे से अलग करते हैं। हॉकेट (1958:321) ने भाषाई विविधता को 'किसी एक व्यक्ति की किसी निश्चित समय में बोलने की आदतों की समग्रता' के रूप में परिभाषित किया है। एक ही भाषाई समाज में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा एक जैसी होती है, लेकिन इसकी भाषाई विविधताएँ भाषाई विविधताओं में सूक्ष्म अंतर पैदा करती हैं। विभिन्न स्थितियों और क्षेत्रों में इस्तेमाल की जाने वाली भाषाई विविधताएँ स्थानीय बोलचाल की भाषा के उपयोग के साथ मिलकर बोलियों को जन्म देती हैं। भाषाई विविधता, बोलियों और मानकीकृत भाषाई उपयोग के विभिन्न संयोजन हमारे चारों ओर देखे जा सकते हैं। इसलिए इंडियोलैक्ट्स मिलकर एक बोली बनाते हैं और फिर विभिन्न बोलियों से एक मानक भाषा का निर्माण होता है। किसी भाषा का मानकीकरण एक लंबी और धीमी प्रक्रिया है, जहाँ बोलियों से अलग एक भाषा व्यापक संचार, आत्मनिर्भरता और लगातार उपयोग के अवसरों की क्षमता और गहराई विकसित करती है और अच्छी तरह से जुड़ी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की एक वंशावली को बनाए रखती है।

ऑनलाइन संचार में हिंदी के प्रयोग में क्षेत्रीय विविधताएँ

भाषा सभ्य समाज की अंतिम उपलब्धि है। यह विचारों, भावनाओं और कार्यों को संप्रेषित करने, महसूस करने, विस्तृत करने और व्यक्त करने का एक साधन है। समाज में हमारा व्यवहार और भाषा का उपयोग अक्सर विभिन्न सामाजिक दबावों और पूर्वाग्रहों द्वारा नियंत्रित होता है। भाषा हमें घेरती है, हमारे व्यक्तित्व को परिभाषित करती है, हमारे सामाजिक व्यवहार को निर्धारित करती है, हमारी सामाजिक व्यवस्था का समर्थन करती है, हमारे विचारों और भावनाओं को इंगित करती है और हमें अपने विचारों को साझा करने, सहयोग करने और हमारी विकास प्रक्रिया को परिष्कृत करने के लिए एक मंच प्रदान करती है। इस प्रकार भाषा अच्छी तरह से परिभाषित सामाजिक समूहों में काम करने वाली सक्रिय मानवीय चेतना का एक उत्पाद है। समाज और भाषा एक दूसरे से आसानी से पहचाने जाते हैं और एक दूसरे पर काफी निर्भर हैं। प्रत्येक समाज अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार अपनी भाषा बनाता है और भाषा बदले में समाज को प्रभावित करती है और भविष्य के समाज में बदलाव का मार्ग प्रशस्त करती है। भाषा में परिवर्तन अक्सर सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण के परिवर्तन और विकास द्वारा चिह्नित होता है। बदलते परिवेश के निरंतर प्रवाह में, भाषा में परिवर्तन धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से दिखाई देते हैं।

भाषा का निर्माण सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों के आत्मसातीकरण से होता है। परिणामस्वरूप, भाषा में विविधता और व्यापक गुणवत्ता मौजूद होती है, जिससे भाषा के उपयोग में बहुत अधिक भिन्नताएँ पैदा होती हैं। भाषा की विविधता मुख्य रूप से प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अभिव्यक्ति की शैली के कारण होती है, जो बोलचाल के उपयोग और बोलियों की विविधताओं के साथ मिल जाती है। भाषाई विविधता से लेकर बहुभाषावाद तक, हर समाज में भाषाई विविधता मौजूद है। भाषाई विविधता वह भाषा है जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए अद्वितीय होती है और इसलिए इसमें कई विशेष व्यक्तिपरक लक्षण शामिल होते हैं जो एक भाषाई विविधता को दूसरे से अलग करते हैं। हॉकेट (1958:321) ने भाषाई विविधता को 'किसी एक व्यक्ति की किसी निश्चित समय में बोलने की आदतों की समग्रता' के रूप में परिभाषित किया है। एक ही भाषाई समाज में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा एक जैसी होती है, लेकिन इसकी भाषाई विविधताएँ भाषाई विविधताओं में सूक्ष्म अंतर पैदा करती हैं। विभिन्न स्थितियों और क्षेत्रों में इस्तेमाल की जाने वाली भाषाई विविधताएँ स्थानीय बोलचाल की भाषा के उपयोग के साथ मिलकर बोलियों को जन्म देती हैं। भाषाई विविधता, बोलियों और मानकीकृत भाषाई उपयोग के विभिन्न संयोजन हमारे चारों ओर देखे जा सकते हैं। इसलिए इंडियोलैक्ट्स मिलकर एक बोली बनाते हैं और फिर विभिन्न बोलियों से एक मानक भाषा का निर्माण होता है। किसी भाषा का मानकीकरण एक लंबी और धीमी प्रक्रिया है, जहाँ बोलियों से अलग एक भाषा व्यापक संचार, आत्मनिर्भरता और लगातार उपयोग के अवसरों की क्षमता और गहराई विकसित करती है और अच्छी तरह से जुड़ी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की एक वंशावली को बनाए रखती है।

निष्कर्ष

मैं इस दृष्टिकोण के साथ निष्कर्ष निकालता हूँ कि भाषा की विचारधारा और भाषा के दृष्टिकोण के बीच एक संबंध वास्तव में मौजूद है, लेकिन यह एक जटिल संबंध है जो द्वंद्वात्मक और असंगत दोनों हो सकता है। मेरी व्याख्या यह है कि वे वास्तव में संबंधित हैं, लेकिन वे कैसे अलग होते हैं यह उनकी समानताओं के समान ही महत्वपूर्ण है। उनके पास अलग-अलग अनुशासनात्मक और ज्ञान-मीमांसा संबंधी उत्पत्ति है और वे अलग-अलग विद्वता प्रदान करते हैं—यद्यपि संबंधित-सैद्धांतिक और पद्धतिगत अवधारणाएँ। इसलिए सभी मामलों में सामंजस्यपूर्ण रूप से पूरक के रूप में दृष्टिकोण और विचारधाराओं को सिद्धांतबद्ध करने की कोशिश करना व्यर्थ है। फिर भी, और जब तक भाषा को एक सामाजिक घटना के रूप में देखा जाता है, विचारधारा और दृष्टिकोण भाषाई विविधता के मामलों और घर में भाषाओं के रखरखाव और विकास को निर्देशित करने वाले कारकों की भीड़ के साथ जमीनी स्तर पर जुड़ाव की जांच के लिए आवश्यक अवधारणाएँ बनी रहेंगी। संतुलन बनाने के लिए, अनुवादकों को लक्षित दर्शकों, अनुवाद के उद्देश्य और भाषाई और सांस्कृतिक संदर्भों पर सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए। कोड-स्विचिंग का उपयोग विवेकपूर्ण तरीके से किया जाना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि यह पाठ को समृद्ध करे न कि इसकी स्पष्टता और सुसंगतता को कम करे। ऐसा करने से, अनुवादक ऐसे अनुवाद तैयार कर सकते हैं जो स्रोत के लिए प्रामाणिक हों और लक्षित दर्शकों के लिए सुलभ हों।

स्पष्ट अनुवाद, प्रतिस्थापन और दीर्घवृत्त जैसी अनुवाद रणनीतियाँ दृष्टिकोणों के एक स्पेक्ट्रम के साथ बिंदुओं का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिनमें से प्रत्येक प्रामाणिकता और पठनीयता के लिए निहितार्थ रखता है। स्पष्ट अनुवाद: स्पष्ट अनुवाद में मूल अर्थ को यथासंभव सुरक्षित रखने के लिए कोड-स्विच किए गए तत्वों का सीधा अनुवाद प्रदान करना शामिल है। यह रणनीति तब उपयुक्त होती है जब कोड-स्विच किए गए तत्व पाठ के अर्थ के लिए महत्वपूर्ण होते हैं और जब अनुवादक का उद्देश्य प्रामाणिकता का उच्च स्तर बनाए रखना होता है। प्रतिस्थापन: प्रतिस्थापन में लक्ष्य भाषा में कोड-स्विच किए गए तत्वों को उनके सांस्कृतिक या अर्थ संबंधी समकक्षों से बदलना शामिल है ताकि पाठक को भ्रमित किए बिना मूल की भावनात्मक और सांस्कृतिक प्रतिध्वनि को बनाए रखा जा सके। यह दृष्टिकोण तब उपयोगी होता है जब कोड-स्विच किए गए तत्व लक्षित दर्शकों के लिए अपरिचित या भ्रमित करने वाले हो सकते हैं या जब अनुवादक सख्त प्रामाणिकता पर पठनीयता और पहुंच को प्राथमिकता देता है। एलिप्सिस: एलिप्सिस या लोप में कोड-स्विच किए गए तत्वों को पूरी तरह से छोड़ दिया जाता है। यह रणनीति तब उपयुक्त होती है जब कोड-स्विच की गई सामग्री मुख्य संदेश से अलग होती है या जब इसका समावेश अनुवाद को काफी जटिल बना देता है। हालाँकि, स्रोत पाठ के अर्थ को विकृत करने से बचने के लिए एलिप्सिस का उपयोग संयम से किया जाना चाहिए। इन रणनीतियों को स्पष्ट रूप से चित्रित करके और उनके अंतर्संबंधों पर विचार करके, अनुवादक कोडस्विचिंग की जटिलताओं को अधिक प्रभावी ढंग से समझ सकते हैं।

पहले बताए गए भाषाई और भाषा-बाह्य कारकों की गहरी समझ अनुवादकों के लिए सबसे उपयुक्त रणनीति चुनने के लिए महत्वपूर्ण है, चाहे वह स्पष्ट अनुवाद हो, प्रतिस्थापन हो या दीर्घवृत्त हो। अनुवादकों को एक अनूठी चुनौती का सामना करना पड़ता है: मूल पाठ की भाषाई और सांस्कृतिक जटिलता को बनाए रखना और यह सुनिश्चित करना कि अनुवाद सुसंगत और लक्षित भाषा के दर्शकों के लिए सुलभ बना रहे।

संदर्भ

1. यादव, मुकेश. (2015). हिंदी विषय-वस्तु पर भावना विश्लेषण: एक सर्वेक्षण. 4. 14-21.
2. मेहता, स्मिथ. (2019). स्थानीयकरण, विविधीकरण और विविधता: भारतीय नए मीडिया के भाषाई और सांस्कृतिक तर्क को समझना. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कल्चरल स्टडीज. 23. 136787791988030. 10.1177/1367877919880304.
3. कुमार, अमित और गौर, पूनम (2019)। हिंदी और अंग्रेजी टेलीविजन समाचार चैनलों की विषय-वस्तु: पत्रकारों का दृष्टिकोण। इरा-इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट एंड सोशल साइंसेज (आईएसएसएन 2455-2267)। 14. 8. 10.21013/jmss.v14.n1.p2.

4. सिन्हा, कस्तूरी. (2022). हिंदी भाषा के पतन के बारे में बताने वाला साहित्य. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड आर्ट्स कंप्यूटिंग. प्रकाशित: खंड: 3, पृष्ठ संख्या: 58-63 आईएसएसएन संख्या: 2582.
5. मेहता, स्मिथ. (2019). स्थानीयकरण, विविधीकरण और विविधता: भारतीय नए मीडिया के भाषाई और सांस्कृतिक तर्क को समझना. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कल्चरल स्टडीज. 23. 136787791988030. 10.1177/1367877919880304.